भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-2/अंक -15/ सितम्बर -2022

www.bhartiyaparampara.com

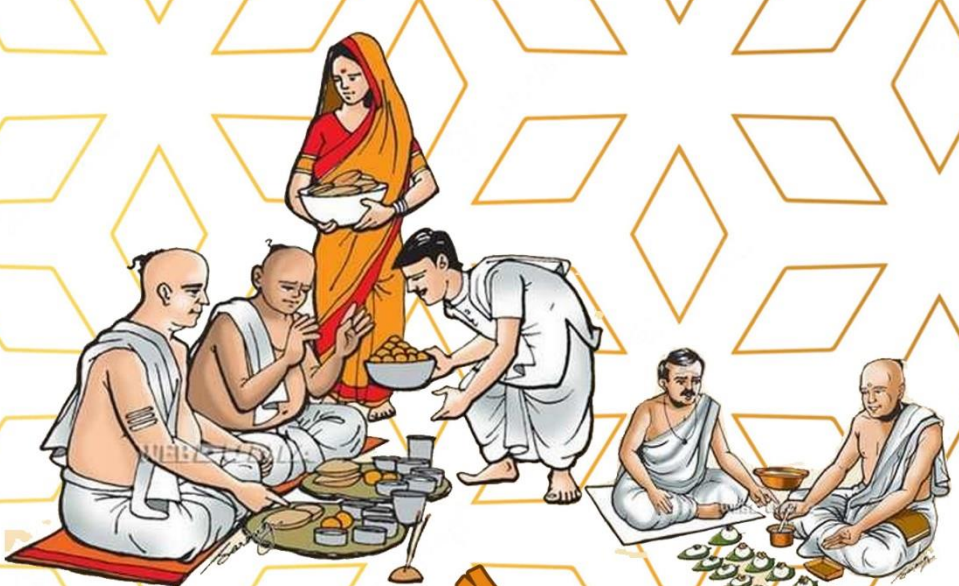

श्रद्धा से श्राद्ध

भारतीय परम्परा

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-2/अंक -15/ सितम्बर -2022

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

सितम्बर माह

साका कैलेण्डर - 1944 विक्रम संवत - 2079 अयान - दक्षिणायन ऋतु - शरद

सोम		05 भाद्र. शु. नवमी, ज्येष्ठ गौरी विसर्जन, शिक्षक दिवस	12 अश्विन कृ. द्वितीया	19 अश्विन कृ. नवमी	26 अश्विन शु. प्रतिपदा,नवरात्र घट स्थापना, म. अग्रसेन जयंती
मंगल		06 भाद्र. शु. दशमी/एकादशी परिवर्तिनी एकादशी व्रत, तेजा दशमी	13 अश्विन कृ. तृतीया, सकंष्टी चतुर्थी	20 अश्विन कृ. दशमी	27 अश्विन शु. द्वितीया
बुध		07 भाद्र. शु. द्वादशी, वामन जयंती, कल्की द्वादशी	14 अश्विन कृ. चतुर्थी, हिन्दी दिवस	21 अश्विन कृ. एकादशी, इन्दिरा एकादशी व्रत	28 अश्विन शु. तृतीया
गुरू	01 भाद्र. शु. पंचमी, ऋषि पंचमी, सम्वत्सरी पर्व	08 भाद्र. शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, ओणम पर्व	15 अश्विन कृ. पंचमी, अभियन्ता दिवस	22 अश्विन कृ. द्वादशी	29 अश्विन शु. चतुर्थी, विनायक चतुर्थी
शुक्र	02 भाद्र. शु. षष्ठी, स्कंध षष्ठी	09 भाद्र. शु. चतुर्दशी, गणेश विसर्जन, अनन्त चतुर्दशी	16 अश्विन कृ. षष्ठी	23 अश्विन कृ. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत, शरदकाल समाप्त	30 अश्विन शु. पंचमी
शनि	03 भाद्र. शु. सप्तमी, ज्येष्ठ गौरी आवाहन, महालक्ष्मी व्रत	10 भाद्र. शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, श्राद्ध पूर्णिमा	17 अश्विन कृ. सप्तमी, विश्वकर्मा पूजा	24 अश्विन कृ. चतुर्दशी, मासिक शिवरात्री	
रवि	04 भाद्र. शु. अष्टमी, राधा अष्टमी, गौरी पूजा	11 अश्विन कृ. प्रतिपदा, श्राद्ध पक्ष प्रारंभ	18 अश्विन कृ. अष्टमी	25 अश्विन कृ. अमावस्या, सर्वपित्र अमावस्या,	

भाद्र.- भाद्रपद कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

वैदिक काल में जिसे हम रक्षासूत्र कहते थे उसे ही आजकल राखी कहा जाता है। मुझे याद है बचपन में हमारी बुआजी ऋषि पञ्चमी वाले दिन पहले पहले रेशम की पाँच या सात पतली रंगीन डोरियों से बनी रक्षासूत्र थोड़ा फैलाकर हम सभी के हाथ में बाँधती थी। बाद में हमारे आग्रह पर हमारी माताजी ने रेशमी फूँदों वाली राखी हमारी बहन से बँधवाना शुरू किया तब बुआजी ने भी उसी अनुसार हम भतीजों के लिये रेशमी फूँदों वाली राखी बाँधना प्रारम्भ कर दिया हालाँकि पिताजी को तो वही रेशम की पाँच या सात पतली रंगीन डोरियों वाला वैदिक रक्षा सूत्र बाँधती थी। अब जैसा आप सभी जानते भी होंगे और मानते भी होंगे कि रक्षासूत्र केवल पाँच या सात पतली रंगीन डोरियाँ नहीं बल्कि यह बाँधने और बँधवाने वालों के बीच शुभ भावनाओं व शुभ संकल्पों का पुलिंदा होता है। उस समय इस पर्व के शुरुवात के समय उपलब्धता के आधार पर एक छोटा-सा ऊनी, सूती या रेशमी पीले कपड़े के टुकड़े में दूर्वा, अक्षत (साबूत चावल), केसर या हल्दी, शुद्ध चंदन एवं कुछ सरसों के साबूत दाने - इन पाँच समानों [जो हमारे घरों में आसानी से मिल जाते हैं] को मिलाकर छोटे से कपड़े के टुकड़े में बाँध रक्षासूत्र वाले कलावे से जोड़ हाथ पर बाँध देते थे। कालान्तर में यही स्वरूप पहले तो रेशमी फूँदों वाली राखी में बदला और धीरे धीरे आज जिस रूप में हम सभी देख रहे है अर्थात केवल कच्चे सूत जैसे कलावे, रेशमी धागे से आगे सोने या चाँदी जैसी मँहगी वस्तु तक की राखियाँ उपलब्ध हैं और आजकल इस राखी वाले व्यवसाय में कई सौ लाखों का वारा-न्यारा हो रहा है।

अब आपके ध्याननार्थ बताना चाहूँगा यह पर्व दो अलग अलग तिथियों को मनाया जाता है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पञ्चमी जिसे हम **ऋषि पञ्चमी** कहते हैं, वाले दिन माहेश्वरी जाति के अलावा गौड़, पारीक, दाधीच, सारस्वत, गुर्जर गौड़, शिखवाल के अलावा खन्डेलवाल माहेश्वरी एवं पुष्करणा हर्ष जाति में बहन भाई को रक्षासूत्र/राखी बांधती है जबकि बाकी सभी जगह, क्योंकि यह पर्व न केवल पूरे भारत में बल्कि नेपाल में भी, श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन जिसे हम **श्रावणी-पूर्णिमा** कहते हैं, वाले दिन रक्षाबंधन वाले त्योहार के रूप में मनाया जाता है।

आप सभी की जानकारी के लिये बता दूँ कि माहेश्वरी समाज में पीढ़ी दर पीढ़ी से अर्थात परम्परागत रुप से ऋषि पञ्चमी के दिन ही बहनें अपने भाईयों को रक्षासूत्र बांध यह त्योहार मनाते आ रहे हैं। हालाँकि आजकल यह भी देखने में आ रहा है कि एक ही परिवार में दोनों ही दिन यह पर्व मनाया जाने लगा है जिसका मुख्य कारण अन्तर्जातीय विवाह सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में यही बताना चाहूँगा कि परम्परागत रूप से भारत एवं नेपाल के हिन्दुओं में अन्तरजातीय विवाह बहुत कम होते रहे हैं किन्तु अब शहरीकरण के चलते ज्यादा से ज्यादा युवा महिला और पुरुष जाति के बंधनों से परे अपनी व्यक्तिगत पसंद से शादी करना चाहते हैं और हमारे समाज से भी इसे अपेक्षाकृत अधिक स्वीकृति मिलने लगी है।

उपरोक्त बताये अनुसार दोनों समय मनाया जाने वाला यह त्योहार भाई और बहन का त्योहार है, भाई बहन के प्यार का प्रतीक है। इन दोनों दिनों में बहनों में एक अलग तरह का उमंग देखने में आता है जिसका एकमात्र कारण सुख-दुख में साथ निभाने की प्रतिबद्धता। लेकिन आजकल सगी बहनों को उपहार चाहे नगद हो या अन्य किसी रूप में देकर, इतिश्री कर लेते हैं। जबकि आगे दोनों के बीच, भले ही मुहँबोली बहन हो या मुहँबोला भाई, एक निश्छल प्रेम देखने मिलता था। इसका एक छोटा सा उदाहरण आपको अवश्य ही आनंदित कर देगा जो इस प्रकार है - जैसा सभी प्रबुद्ध पाठक जानते होंगे **हिन्दी साहित्य युग के महानायक और उसकी आत्मा क्रमशः पं सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' और उनकी मुंहबोली बहन महादेवी वर्मा के बीच रक्षाबंधन वाले, एक दिन जो घटना पढ़ने में आती है उसके अनुसार 'निरालाजी' रिक्शे में बैठ मुंहबोली बहन महादेवीजी के यहाँ राखी बँधवाने के लिये पहूँच, उससे ही बारह रुपये मांगते हैं और तो और महादेवीजी के यह पूँछने पर कि 12 रुपये काहे चाहिए तो मुहँबोला भाई उत्तर देता है दुई रुपैया इस रिक्शे वाले को और 10 तुमको राखी बधाई का दूँगा। ऐसी निश्छल प्रेम वाली घटना पढ़ हम सभी की भी आँखे छलछला उठती है।**

अब आपको **जैसा पढ़ने में आता है उस अनुसार बताना चाहूँगा कि श्रावण पूर्णिमा के दिन राखी बांधकर बहन अपने भाई से स्वयं की रक्षा करते रहने की प्रार्थना करती है जबकि ऋषि पञ्चमी के दिन बहन उपवास कर भाई को राखी बांधकर भगवान से हमेशा अपने भाई की कुशल-मंगल की कामना करती है।** जबकि आजकी बदली हुयी परिस्थति में दोनों ही पर्व पर अर्थात ऋषि पञ्चमी और श्रावण पूर्णिमा रक्षाबंधन दोनों ही पर्व पर, बहन-भाई दोनों को एक दूसरे की रक्षा का न केवल संकल्प की आवश्यकता है बल्कि दोनों को ही एक दूसरे की कुशल-मंगल की कामना करने की भी आवश्यकता है जैसा रक्षाबंधन का शाब्दिक अर्थ **'सुरक्षा का बंधन'** स्पष्टतौर पर इस ओर इंगित करता है।

आखिर निष्कर्ष में यही सत्य प्रतीत होता है कि दोनों ही पर्व बहन-भाई के रिश्तों की मधुरता को दर्शाता है। भारतीय परम्पराओं में इन पर्वों का विशेष महत्व है। ऐसे पर्वों से सामाजिक सम्बन्धों को मजबूती मिलती है। दोनों का अपना-अपना अस्तित्व ही नहीं है बल्कि पौराणिक एवं सामाजिक महत्व है और हमें दोनों के महत्त्व को समझकर उसका सम्मान करना चाहिए.. न की अपने अपने सुविधा अनुसार धर्म की रीति को बदलना उचित है...!

- गोवेर्धन दास बिन्नानी जी 'राजा बाबू', बीकानेर (राजस्थान)

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
संगीता जी दरक का धन्यवाद

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट

पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

राधा अष्टमी

राधाष्टमी यानी देवी राधा का जन्मदिन, यह हर साल भाद्र शुक्ल अष्टमी तिथि को मनाया जाता है। इस दिन देवी राधा के जन्म स्थल बरसाना सहित पूरे ब्रजभूमि में उत्सव मनाया जाता है। लेकिन देश के दूसरे भागों में भी श्रद्धालु इस दिन व्रत और उपवास रखते हैं। देवी राधा को देवी लक्ष्मी का ही अंश माना जाता है जो भगवान श्रीकृष्ण की लीला में सहयोग करने के लिए प्रकट हुई थी। ऐसी धार्मिक मान्यता है कि देवी राधा के जन्मदिन यानी भाद्र शुक्ल अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक जो साधक देवी राधा की पूजा करते हैं और राधा के मंत्रों का जप करते हैं उन पर कुबेर और देवी लक्ष्मी की खास कृपा हो जाती है। ऐसे साधकों को गरीबी छू भी नहीं पाती है।

राधा अष्टमी की पूजा विधि -

- देवी राधा जी की पूजा दोपहर के समय की जाती है।
- सुबह सबसे पहले स्नान ध्यान करें।
- सूर्य नारायण को जल देकर देवी राधा की पूजा और व्रत का संकल्प लें।
- पूजा स्थान में एक चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर चौकी के मध्य में देवी राधा संग श्रीकृष्ण की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें।
- फूल, अक्षत, चंदन, लाल चंदन, सिंदूर, रोली, सुगंध, धूप, दीप, फल, खीर, मिठाई सहित देवी राधा और श्रीकृष्ण की पूजा करें।
- देवी राधा के मंत्र **'ऊं ह्रीं श्रीं राधिकायै नमः'** का 108 बार या यथा संभव जप करें।
- पूजा के बाद व्रत रखना हो तो एक ही समय भोजन करें।
- अगले दिन ब्राह्मणी (महिला) को भोजन करवा कर दक्षिणा और सुहाग सामग्री भेंट करें।
- इसके बाद व्रती भोजन करके व्रत को पूर्ण करें।

- पदम माहेश्वरी जी, दिल्ली

पत्रिका की प्रूफ रीडिंग करने के लिए
संगीता जी दरक का धन्यवाद

WHITE BERRY
RESIDENCY
www.whiteberryresidency.com
LUXURIOUS
HOMES
1& 2 BHK With Jodi Flat Option
Possession
December 2022
Terrace Garden with
Lift accessibility
Adjoining Jain
Derasar
Gym and
Yoga Room
Table Tennis
Indoor Games
Library - Increase
kids knowledge
Landscape Garden
Google Location
QR Code:
98705 80810, 85913 69996
Asha Nagar, Thakur Complex, Kandivali (E), Mumbai.
Scan Now

wwww.kingsweds queens.com
GAATHBANDHAN
HER
and
HIM
Sample Text Sample Text
Wedding
+91 7303021123
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
PAPER - LESS
&
SHIPPING - FREE
WEDDING
INVITATION
Call Us

मां के बाद शिक्षक बच्चों के भविष्य निर्माण में महती भूमिका निभाने में सच्चे भागीदार होते हैं। यह सही है कि शिक्षा व शिक्षक में बहुत बड़ा फासला नहीं होता है बच्चों के परवरिश का पूरा जिम्मा माता पिता पर होता है वहीं दूसरी ओर शिक्षक के कंधों पर बच्चों के भविष्य निर्माण की दीवारों को गहरी फाउंडेशन व पक्की ईंट गारे से समुचित निर्माण का पक्का स्तम्भ तैयार करना है जिससे बच्चे का समग्र चारित्रिक व मानसिक विकास संभव हो सकता है।

एक समय होता था जब गुरुकुल होते थे व गुरु शिष्य शिक्षा दीक्षा परंपरा होती थी उस समय बच्चों का पूरा विकास गुरु के सानिध्य में ही फलता फूलता था पर आज स्थिति बेहद उलट है आज यह परंपरा लगभग विलुप्त हो गई है गुरु व शिष्य के बीच दोस्ताना व्यवहार सामने होता है एक जो अदब होती थी वह अब सम्भवतः आज नहीं देखने को मिलेगी।

शिक्षक से अपेक्षायें –

शिक्षक जो हमारे बच्चों के भविष्य की भविष्यवाणी तो नही कर सकते पर उसके उज्ज्वल भविष्य को बनाने में अवश्य अपना सर्वश्रेष्ठ से सर्वश्रेष्ठ योगदान देने की कवायत करते हैं करनी भी चाहिए।

एक अच्छे शिक्षक के क्या गुण हों यह अवश्य एक यक्ष प्रश्न होना भी चाहिये क्योंकि अच्छा शिक्षक अपने अच्छे व्यक्तित्व कृतत्व से अपनी अच्छी संवाद शैली के माध्यम से एक बच्चे पर ही नही वरन पूरी कक्षा पर दूरदर्शी धनात्मक प्रभाव छोड़ सकता है और जब वही बच्चों की भविष्य एक दिन उज्ज्वल हो जाता है तो निःसन्देह यह शिक्षक के लिए उसकी मेहनत का फल होता है साथ ही आत्मसंतुष्टि का क्षण भी।

प्रत्येक माता पिता की यही अपेक्षा रहती है कि बच्चे के सर्वागीण विकास को निखारने के प्रयास शिक्षक पर पूरी श्रद्धा से छोड़ देते हैं फिर बच्चों के सम्पूर्ण विकास का क्रम चौतरफा फल फूल सके व माता पिता के उन अरमानों को सफलता में परिवर्तन होते देखने की एक चाह छिपी होना स्वाभाविक है।

जीवन मूल्यों के संबंध में शिक्षकों से अपेक्षा –

जिस प्रकार आज के बदलते परिवेश में शिक्षकों व विद्यर्थियों के जीवन मूल्यों में यकायक परिवर्तन आया है वह कहीं न कहीं चिंतित करने वाला प्रश्न है जीवन मूल्यों के श्रेष्ठ उद्देश्य यदि शिक्षक के व्यवहार में, उसके कार्यों में परिलक्षित होता है तो निसंदेह ही बच्चों के चारित्रिक विकास पर उसका सीधा प्रभाव पड़ना तय है ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि पहली नजर में शिक्षकों के जीवन मूल्य उच्चतम स्तर के हों सिद्धांत मय हों निसन्देह इन का प्रभाव स्वतः ही बच्चों के चारित्रिक विकास पर चार चांद लगाएगा।

जिस प्रकार चरित्र पतन छात्रों में बड़े स्तर पर सामने आया है यह भयावहता है आखिर क्यों न शिक्षक को सबसे पहली प्राथमिकता स्व-चरित्र व स्व-व्यवहार व महापुरुषों जैसे जीवन मार्ग के रास्तों पर चलने की भरसक कोशिश करनी चाहिए जिसमें स्व-अनुशासन, संयम, अध्यात्म, दूरदर्शीता, सत्य पालन, त्याग व समर्पण भाव आदि गुणों का प्रतिबिम्ब छात्रों के सामने पेश हो सके।

भारतीयता के संदर्भ में –
शिक्षक न सिर्फ एक स्कूल के बच्चों के मानसिक विकास की धुरी होता है वह पूरे राष्ट्र के सफल निर्माण का मजबूत स्तम्भ होते हैं, यह अनिवार्य है कि हमारे शिक्षक भारत के विकास उसके सुखद भविष्य के लिए अपने बौद्धिक स्तर पर कोन से ऐसे प्रयास कर सकते हैं जिससे भारत का भविष्य उज्ज्वल हो व आज का भारत सोने की चिड़िया बन सके व भारत का एक एक बच्चा भारत का श्रेष्ठतम देश प्रेमी साबित हो यह नीव डालने की प्रतिबद्धता हमारे शिक्षकों के चरित्र में अवश्य रचे बसे। प्रत्येक शिक्षक समुदाय को अपने कर्म, धर्म, व चरित्र में पूर्ण रूप से भारतीय सभ्यता के प्रति निष्ठा व गर्व का भाव सदैव रहना नितांत आवश्यक है।

संस्कारों के संदर्भ में शिक्षकों के कर्त्तव्य –
सच्चे मायने में शिक्षकों की पहली प्राथमिकता उचित संस्कारों में सन्निहित शिक्षा के अनुपालन कराना व बच्चों में आदर्श संस्कृति, संस्कारों का बीजारोपण कूट-२ कर कराए जाने व स्वयं के आचरण को एक आदर्श प्रस्तुतिकरण कर बच्चों की शिक्षा को किसी भी हाल में संस्कार विहीन होने से बचाने से रोकना है व एक आदर्श विद्यालय से आदर्श विद्यार्थियों की खेप तैयार करने की मुहिम होनी आवश्यक ही नहीं नितान्त भी है।

राष्ट्रीयता के संदर्भ में –
शिक्षक व शिष्य के बीच राष्ट्र धर्म का बीजारोपण अत्यंत आवश्यक है जितनी आवश्यकता गुरु को अपने शिष्य के प्रति ज्ञान के प्रति जागरूक बनाये रखना है उससे कहीं अधिक आवश्यकता अपने राष्ट्र के प्रति सम्मान व कृतज्ञता का भाव बनाये रखना है जो गुरु के द्वारा शिष्य में राष्ट्र प्रेम की अलख हर पल हर जगह प्रवाह रूप में बनी रहे ऐसा प्रयत्न शिक्षक के द्वारा निर्धारित किया जाना चाहिए। शिक्षक को स्वयं भी यह भान होना चाहिए कि राष्ट्रधर्म यथेष्ठ पालन किया जाना व उनकी असल अर्जित की गई शिक्षा का फल है व आने वाली पीढ़ियों के लिए भी गुरु शिष्य परंपरा में यह राष्ट्र प्रेम भावना बनी रहे।

अनुशासन के सन्दर्भ में –
हमेशा से ही हमारे शिक्षक अनुशासन के प्रतिरूप सिद्ध हुए हैं जिनका अनुसरण हमारी छात्र पीढ़ी सदैव करते आए है। एक अविभावक होने के वास्ते यह आकांक्षा रही है कि हमारे शिक्षक स्व अनुशासन का पालन पूर्ण प्रतिबद्धता से करें व एक मिशाल कायम कर पाएं शिक्षा के साथ अनुशासन का विशेष स्थान रहता है बिना अनुशासन के गुरु व शिष्य के बीच एक सार्थक संवाद कायम होना सदैव नामुमकिन रहेगा अतः अनुसंधान के साथ अनुशासन की भी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि शिक्षा के साथ उसके अनुप्रयोग की।

आत्मनिर्भरता के संदर्भ में –
शिक्षा की सार्थकता तभी फलदायक होती है जब हमारी पीढ़ी को अपने पाँव पर खड़ा करने की ताकत शिक्षक अपने तालीम से अपनी मेहनत लग्न से प्रमाणित कर सकेआज समय की मांग है कि हमारे शिक्षकों को यह चाहिए कि हमारे आने वाले धरोहरों अर्थात विद्यार्थियों को उनके जीवन मे स्वावलंबी बनाए रखने के वह प्रयास किये जायें जो भविष्य में उनके सफल जीवन की ओर अग्रसर होने की कवायत सिद्ध हो सके। जिसका एक ही रास्ता है रोजगारपरक शिक्षा, एवं सम्पूर्ण स्वास्थ।

देश प्रेम के संदर्भ में –
विकास तभी सार्थक होता है जब देश प्रेम की भावना से किया गया हर वह हर कार्य चाहे वह शिक्षा हो या चाहे अन्य, हमारे शिक्षकों की देश प्रेम भावनाओं का हमेशा से ही अनूठा उदाहरण पेश किया जाता रहा है जब भी अनेक सार्वजनिक समारोहों का अनुष्ठान होता है वहाँ पर देश प्रेम साफ दिखाई देता है यह एक उदाहरण है इसी प्रकार आज शिक्षक व शिक्षार्थियों के बीच देश प्रेम का सार्थक संवाद बना रहना हमारी प्राचीन विरासत को सहेजना व कायम रहना है हमें यह अपेक्षा रहती है कि हमारे शिक्षक हर दिन हमारे विद्यार्थियों को अपने राष्ट्र के प्रति अच्छे आदर्शों पर चलने की शिक्षा प्रदान करे व देश की अखंडता व शौर्य के प्रति विद्यार्थियों को इस गौरवशाली विषय हेतु आकृष्ट कराएं।

आज यह विडंबना है कि शिक्षा दो भागों में बंट गई है एक सरकारी स्तर पर प्रदान की जाने वाली परम्परा गत शिक्षा दूसरी प्राइवेट स्कूलों में रुपये के हिसाब से तोली जाने वाली शिक्षा जिसमे अनेक स्तर पर असमानताओं का रूप सामने आता है ,दुःख तो तब होता है जब शिक्षक भी महंगे दामों पर मोल भाव के बाद खरीदने व बेचने जैसे व्यवहार में शामिल हो रहे हैं। जिसका खमियाजा गरीब तबके के विद्यार्थियों को अवश्य भुगतान करना पड़ता है।

देश में अच्छी व गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के मानदंडों का रूप एक ही होना चाहिए हर शिक्षक को उच्चतम स्तर के प्रशिक्षण प्रदान कर हर हाल में हर बच्चे के सुखद भविष्य के प्रति जागरूक कर देना चाहिए जैसे कि अब्राहम लिंकन स्वयं अपने बच्चे की उभरती प्रतिभा के प्रति शिक्षक को आकृष्ट करना चाहते थे। आज आखिर क्यों यकायक सरकारी स्कूलों में बच्चों की संख्या गिरती जा रही है व प्राइवेट स्कूल क्यों फुल हो रहे है यह प्रश्न चिन्ह है, अनेक निजी स्कूलों में गरीब तबके के बच्चों के माता पिता अपना पेट काटकर वहां दाखिल कर बच्चों के सुनहरे भविष्य की कल्पना करते है जिसमें यह कोई गारंटी नहीं कि बच्चे का यहाँ विकास दिन दूना रात चौगुना हो यह बच्चे व शिक्षक के शिक्षा संवाद पर निर्भर करता है। गलाकाट प्रतिस्पर्धा आज शिक्षा जगत में जो दिखाई दे रही है वह कहीं न कहीं व्यवसाय बनता अधिक दिखता है, जिसका दुष्परिणाम मानवीय आधार पर ठीक नहीं है।

संतोष कि आज हमारे बच्चों में शिक्षकों से अपनी दिल की बात सांझा करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है जिससे बच्चे के मन में छिपी हुई प्रतिभा का शिक्षक उदय होता जाता है आज आवश्यकता इस बात कि है कि शिक्षकों का कर्तव्य बन जाय कि विद्यार्थी के समग्र विकास पर स्व अनुसंधान कर बालक के सर्वांगीण विकास को

उभारने की बेहतरीन से बेहतरीन कोशिश की जाए जिससे एक दिन जब एक गरीब मां के आंखों में बच्चों के कामयाब होने की चमक होगी वह सम्भवतः दुनियां की सबसे बेहतरीन दौलत उस माता पिता के झोली में होनी तय हो जाएगी व शिक्षक के आत्मगौरव व स्वाभिमान के कदमों के शिलशिला आने वाले समय मे अवश्य समाज व परिवार, देश द्वारा बखूबी याद किया जाएगा।

आज जिस प्रकार पल-पल में बाह्य परिवेश बदल रहा है ऐसे में शिक्षकों को हमारा आह्वान होगा कि बच्चों के मानसिक विकास के साथ उसका चारित्रिक विकास पहली प्राथमिकता में रखा जाए, नैतिकता, संयम व सहानुभूति, देश व माता पिता के प्रति सेवा भाव को हर हाल में समावेश किया जाना तय हो।

- विजय पपनै जी, फरीदाबाद (उ. प्र.)

MXCREATIVITY
Brand Creation & Digital Marketing
CALL US AT
+91 8080518745
Ecommerce Solutions
Good Website Get Praise... Great Website Get Business.
Product Management
Reviwe & Rating
Add to Whishlist
Add to Cart
Checkout
Payment Gateway
Shipping
Order Management
Website Security

We help you to transform your STORE into a Digital Brand.
www.mxcreativity.com

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।
- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर 7303021123 को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।
- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।
- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।
- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

पथ मेरा गुरूजन सरल करें

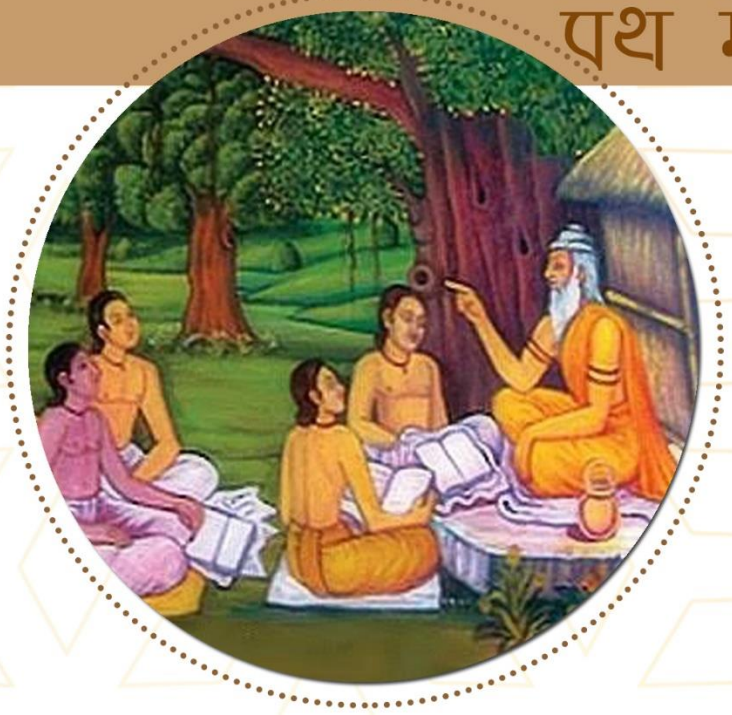

उपदेशों से मन होता भारी,
सूक्ति वाक्य जो समझ परे है।
पुस्तक बोझ समझ कर ढोता
विद्यालय से हर रोज डरे है।
कुछ ऐसा कर दो मेरे गुरुवर,
मन में रोचकता का रंग भरे,
पथ मेरा गुरुजन सरल करें ।।1।।

पाठ्य पुस्तक और पाठ्यक्रम
उत्साह मेरा बुझा रहे।
विद्यालय में बढ़ते संसाधन
फिर भी मुझको चिढ़ा रहे।
हर लो चिंता मेरी गुरुवर,
हम पढ़ने से है बहुत डरे,
पथ मेरा गुरुजन सरल करें ।।2।।

उलट मान्यता स्कूलों की,
हमको कमतर आंक रहे।
सभी पुस्तकों का निचोड़
गुरुजन हमको पढ़ा रहे।
खूब पढ़ें हम सब बच्चे,
ऐसा कुछ हम काम करें,
पथ मेरा गुरुजन सरल करें ।।3।।

बाल साहित्य की रुचिकर दुनिया,
छपी लिखी सामग्री पाए
बहुत कार्टून छपे है इन पर,
बहुत ज्ञान हम इससे पाएं।
ऐसा जोर लगा दो गुरुवर,
शाला से हम नहीं डरें,
पथ मेरा गुरुजन सरल करें ।।4।।

पढ़ने को हम कुछ खोजें,
खोज बीन कर हम लिख लें
खेलें, सीखें सब गतिविधियां,
अच्छे नोट्स हम रच लें।
ऐसी दिशा दिखा दो गुरुवर
कलुष हृदय के दूर करें
पथ मेरा गुरुजन सरल करें ।।5।।

– **भगवत पटेल जी, जालौन, (उ.प्र.)**

पढ़-लिख कर ज्ञान मिले और मिले खूब सम्मान,
कर्तव्यों का हमें बोध हो, अधिकारों को पाते जान।
अवगुण हों दूर हमारे, सद्चरित्र का होता निर्माण,
विकास का आधार शिक्षा, देश की बढ़ जाए शान।।

शिक्षा से अंधकार मिटे, घर-घर में फैले उजियारा,
दान, धर्म, विज्ञान सिखाए, उन्नति का बने सहारा।
कैसे जीवन सुंदर जीएं और कैसे रहें हम स्वस्थ,
शिक्षा है अनमोल खजाना, हो कल्याण हमारा।।

शिक्षा से मिले जीवन में, नैतिकता, सद्गुण, संस्कार,
मात-पिता बड़ों-गुरुजनों से, कैसे करें हम व्यवहार।
जीवन में नित आगे बढ़ने की, राह बताती शिक्षा,
अच्छी शिक्षा मिले हमें, न करें दायित्वों से इंकार।।

सत्पथ पर चलने की मिले प्रेरणा, बने नई पहचान,
शिक्षा से आडंबर-कुरीतियों को, मिटाना है आसान।
शिक्षित होकर राष्ट्र और समाज को हम दें नई दिशा,
अच्छी शिक्षा जिस देश की हो, वो सदा बने महान।।

अच्छी शिक्षा से समाज में रहे, सद्भाव व समरसता,
अच्छी आदतों का हो उद्भव, न आती हममें कटुता।
शिक्षा से ही मानवता का होता, हमारे हृदय में उद्गम,
हमें मिले ढेरों सी खुशियाँ, न होती कभी नीरसता।।

- लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव जी, ग्राम-कैतहा, बस्ती, (उ. प्र.)

तेजा दशमी

वीर तेजा जी के मंदिरो में मेले का आयोजन होता है। बाबा की सवारी **(वारा)** जिसे आती है, उसके द्वारा रोगी, दुःखी, पीड़ितों का धागा खोला जाता है एवं महिलाओं की गोद भरी जाती है।

परिवर्तिनी एकादशी

भगवान विष्णु के एकादशी तिथि में अपना करवट बदलने या परिवर्तित करने के कारण ही इसे **"परिवर्तिनी एकादशी"** कहा जाता है इस एकादशी के बाद मौसम में भी परिवर्तन होता है। इसे **'पद्मा एकादशी'** भी कहते है।

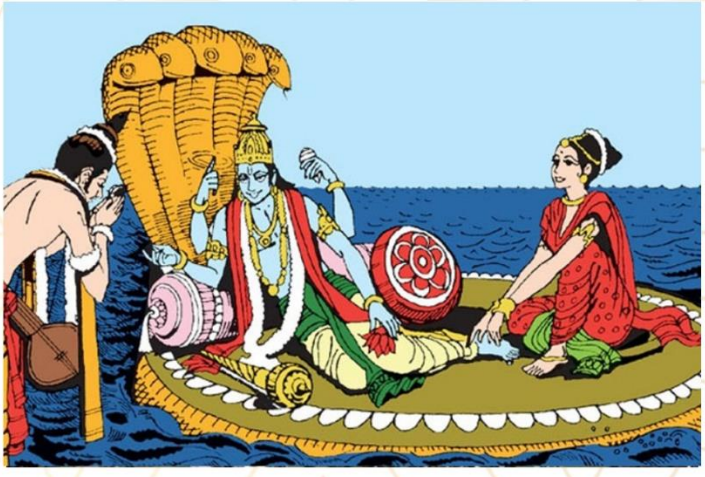

ओणम पर्व

ओणम पर्व के साथ साथ चिंगम माह में केरल में चावल की फसल का त्योहार और वर्षा के फूल का त्योहार मनाया जाता है। यह भगवान विष्णु के वामन अवतार से जुड़ा हुआ है, इस पर्व को केरल में राजा महाबलि के स्मृति में मनाया जाता है।

अनन्त चतुर्दशी

हिंदू पंचांग के अनुसार 10 दिनों तक चलने वाले गणेशोत्सव पर घरों और पंडालों में स्थापित विघ्नहर्ता भगवान गणेश जी की मूर्ति का विसर्जन अनंत चतुर्दशी पर किया जाता है।
गणपति बप्पा मोरिया

लेख पढने के लिए www. आइकन पर क्लिक करें।

हम हर क्षण खुशी मनाने का अवसर ढूंढते रहते है, जिनमें शायद हमारे जन्मदिन का एक विशेष स्थान है। परन्तु हम अपने अवतरण की खुशी में शायद स्वयं के जीवित रहने की व्यवस्था करना भूलते जा रहे हैं। हम जिस सुविस्तृत दिव्य भूमि पर खड़े होकर यह उत्सव मना रहे हैं, क्यों न उसे एक प्यारा सा उपहार दिया जाए। भारत में यदि हर व्यक्ति अपने जन्मदिन पर एक वृक्ष लगाए, तो **प्रतिदिन लगभग 38 लाख यानी 3800000 वृक्षों का वृक्षारोपण होगा।**

इसीलिए यदि हम किसी के जन्मदिन के उत्सव में जाएं भी तो उसे एक पौधा अवश्य भेंट करें। वास्तव में यह उपहार सबसे ज्यादा श्रेष्ठ और अमूल्य होगा।

हम सबको यह अहम कदम उठाने की आवश्यकता है, और इसे जीवन का ध्येय बनाकर एक मुहिम की भांति आगे बढ़ाएं। तो आज ही निश्चय करें की अपने जन्मदिन पर एक पौधा अवश्य लगाएंगे और मित्रों, स्वजनों के जन्मदिन पर उन्हें एक पौधा उपहार भी दें। क्योंकि यह उपहार सिर्फ उपहार नही बल्कि **"जीवन को जीवन देने की प्रक्रिया है"**।

– **दीपक चौरसिया जी "दीप"**

पुष्पांजलि के नवीनतम अंक के अवलोकनार्थ क्लिक करें

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पढ़ी और सुनी भी जा सकती है तथा जिसमें संगीत के लिंक्स भी है जिनसे निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका सन्देश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं. पंजीकृत हो जाएगा।

8610502230 (केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

श्राद्ध क्या होते है?

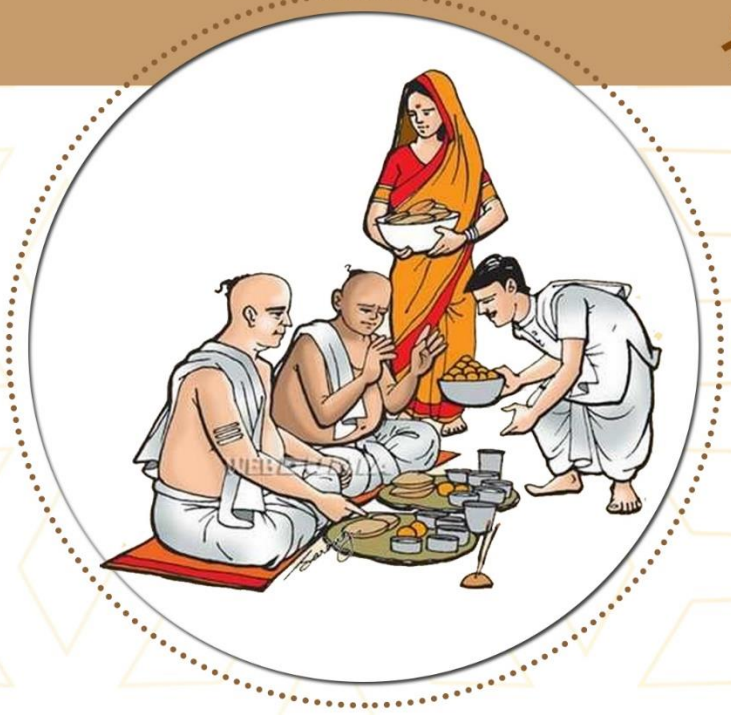

ब्रह्म पुराण के अनुसार **"पितरों की तृप्ति के उद्देश्य से उचित काल या स्थान पर पितरों के नाम उचित विधि पूर्वक जो कर्म श्रद्धा से किये जाये उन्हें श्राद्ध कहते है।"**

"श्रद्धया पितृन उद्दिश्य विधिना क्रियते यतकर्म तत श्राद्धम " ।।

श्रद्धा शब्द से ही श्राद्ध की उत्पत्ति हुई है। श्राद्ध में ब्राह्मणों के माध्यम से पितरों की तृप्ति के लिए भोजन कराया जाता है। पिण्ड रूप में पितरों को दिया गया भोजन भी श्राद्ध का अहम हिस्सा होता है। अपने मृत पितृगण के लिए श्रद्धा भाव से किये श्राद्ध को पितृ यज्ञ भी कहते है, जिसका वर्णन मनुस्मृति, वीर मित्रोदय, श्राद्ध कल्पलता, श्राद्ध तत्व, पितृदायिता आदि अनेक ग्रंथों में मिलता है।

पितरों को श्राद्ध की प्राप्ति कैसे होती है ?

आज के आधुनिक युग में यह जिज्ञासा स्वाभाविक है कि श्राद्ध में दी गयी भेंट और अन्न आदि सामग्री पितरो को कैसे मिलती है। **मृत्यु के बाद जीव को अपने अपने कर्मो के अनुसार गति मिलती है, कोई देवता बनता है, कोई पितर, कोई प्रेत, कोई इंसान, कोई पशु - पक्षी, पेड़ तृण कुछ भी तो सबको अपनी योनि के हिसाब से श्राद्ध का फल मिल जाता है। इसमें अपनी गोत्र / जाति के अनुसार विश्व देव और अग्नि तत्व उनको श्राद्ध की सामग्री प्राप्त करवा देते है। जातक देव योनि का है तो अन्न उसे अमृत के समान प्राप्त होता है, मनुष्य योनि में अन्न के समान और पशु पक्षी की योनि में तृण के समान, नाग योनि में वायु के रूप से और अन्य योनियों में उनके तृप्ति के समान उनको श्राद्धीय भोज प्राप्त होता है। नाम, गोत्र, हृदय की श्रद्धा और सही तरीके से लिए संकल्प से उनको प्राप्त हो जाता है।** जातक चाहे कितनी भी योनियां पार कर जाये उनके नाम का दिया श्राद्ध उन्ही को मिलता है, जिस प्रकार १ बछड़ा गौशाला में अपनी मां गाय को ढूंढ लेता है उसी प्रकार श्राद्ध का सामान भी आपने जातक को मिल जाता है।

पितृपक्ष के दौरान ध्यान रखने योग्य बातें –

धर्म ग्रंथों के अनुसार, विधि-विधान पूर्वक श्राद्ध करने से पितरों की आत्मा को शांति मिलती है। माना जाता है कि पितृपक्ष के 16 दिनों के दौरान सभी पूर्वज अपने परिजनों को आशीर्वाद देने के लिए पृथ्वी लोक पर आते हैं। वे भी अपने घर परिवार का ही हिस्सा होते है, उनके लिए तर्पण, श्राद्ध और पिंड दान किया जाता है। इन अनुष्ठानों को करना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे किसी व्यक्ति के पूर्वजों को उनके इष्ट लोकों को पार करने में मदद मिलती है। वहीं जो लोग अपने पूर्वजों का पिंडदान नहीं करते हैं उन्हें पितृ ऋण और पितृदोष हो जाता है। इसलिए श्राद्धपक्ष के दौरान यदि पितरों का श्राद्ध कर रहे हैं तो इन बातों का ध्यान रखना चाहिए -

श्राद्ध क्या होते है?

९ श्राद्ध अनुष्ठान में परिवार का सबसे बड़ा सदस्य, विशेष रूप से परिवार का सबसे बड़े बेटे से पूरी विधि करवानी चाहिए है।
९ पितरों का श्राद्ध करने से पूर्व स्नान करें और स्वच्छ वस्त्र धारण करें।
९ कुश / घास से बनी अंगूठी पहनें, यह दया का प्रतीक है और इसका उपयोग पूर्वजों का आह्वान करने के लिए किया जाता है।
९ पिंड दान के एक भाग के रूप में जौ के आटे, तिल और चावल से बने गोलाकार पिंड को भेंट करें।
९ श्राद्ध के लिए तैयार किए गए भोजन को कौवे को अर्पित करें क्योंकि इसे यम का दूत माना जाता है।
९ ब्रह्मणों को भोजन अर्पित करें और गंगा अवतराम, नचिकेता, अग्नि पुराण और गरुड़ पुराण की कथाओं का पाठ करें।
९ पितृ पक्ष के दिन संकल्प ले और इस मंत्र का जाप करें –
'ये बान्धवा बान्धवा वा ये नजन्मनी बान्धवा, ते तृप्तिमखिला यन्तुं यश्छमतत्तो अलवक्ष्छति।'
९ जिस स्थान पर आप पीने का पानी रखते हैं, वहां रोज शाम को शुद्ध घी का दीपक लगाएं। इससे पितरों की कृपा आप पर हमेशा बनी रहेगी। इस बात का ध्यान रखें कि वहां जूठे बर्तन कभी न रखें।
९ सर्व पितृ अमावस्या के दिन चावल के आटे के 5 पिंड बनाएं व इसे लाल कपड़े में लपेटकर नदी में बहा दें।
९ गाय के गोबर से बने कंडे को जलाकर उस पर गूगल के साथ घी, जौ, तिल व चावल मिलाकर घर में धूप करें।
९ विष्णु भगवान के किसी मंदिर में सफेद तिल के साथ कुछ दक्षिणा (रुपए) भी दान करें।
९ कच्चे दूध, जौ, तिल व चावल मिलाकर नदी में बहा दें। ये उपाय सूर्योदय के समय करें तो अच्छा रहेगा।
९ श्राद्ध में ब्राह्मण को भोजन कराएं या सामग्री जिसमें आटा, फल, गुड़, सब्जी और दक्षिणा दान करें।
९ श्राद्ध नहीं कर सकते तो किसी नदी में काले तिल डालकर तर्पण करें। इससे भी पितृ दोष में कमी आती है।
९ श्राद्ध पक्ष में किसी विद्वान ब्राह्मण को एक मुट्ठी काले तिल दान करने से पितृ प्रसन्न हो जाते हैं।
९ श्राद्ध पक्ष में पितरों को याद कर गाय को हरा चारा खिला दें। इससे भी पितृ प्रसन्न व तृप्त हो जाते हैं।
९ सूर्यदेव को अर्ध्य देकर प्रार्थना करें कि आप मेरे पितरों को श्राद्धयुक्त प्रणाम पहुँचाए और उन्हें तृप्त करें।

www. श्राद्ध निकालने की विधि

www. पितृपक्ष की पौराणिक कथा

जिन्दगी में कभी किसी
को दोष मत दीजिए
अच्छे लोग खुशियां
लाते है और बुरे लोग
तजुर्बा दे जाते है..!!

दुनिया में सबसे खुश
वो लोग रहते है
जो ये जान चुके है
कि दूसरों से किसी भी
तरह की उम्मीद करना
व्यर्थ है..!!

मुरझा जाते है वो
लोग पेडों की तरह,
जिन्हें हद से ज्यादा
रूलाया जाता है..!!

माफी माँगने वाले
हमेशा गलत नही होते
कुछ लोग झुक जाते है
रिश्ते बचाने के लिए..!!

जब गलत पासवर्ड से
एक छोटा से मोबाइल
नहीं खुलता तो
गलत कर्मो से स्वर्ग
के दरवाजे कैसे
खुल जायेगें..!!

एक मुंह और दो कान
का मतलब है
अगर हम एक बात
बोले तो दो बातें
सुननी भी चाहिए..!!

लघुकथा - पितृपक्ष

"राघव ! तुम तो माँ की तस्वीर को ऐसे निहार रहे जैसे सचमुच मां तुम्हें देख रही हो ..."

गीता, माँ भले ही मुझसे दूर है पर मैं उनका आशीर्वाद हर पल अपने साथ महसूस करता हूं, और न जाने क्यों पितृपक्ष के यह पंद्रह दिन अधिक ही प्रसन्नतापूर्वक जाते हैं लगता है जैसे माँ यहीं घर में साथ हैं, और आज तो माँ का श्राद्ध है।

राघव हमारा यहां जबसे तबादला हुआ है मुझे तो फैक्ट्रियों की कर्कश ध्वनि के अतिरिक्त, यहां कभी किसी पंछी के चहकने की मधुर आवाज़ सुनाई नहीं आयी और नहीं कभी कौआ दिखाई दिया।

"गीता, तुम जल्दी गौ माता का प्रसाद दो, पंडित जी भी जल्द ही आनेवाले हैं।" मैं पहले गौमाता को प्रसाद देकर आता हूं।
तुम्हें चार किलोमीटर की दूरी पर जो मंदिर है वहीं गौमाता मिलेगी, हां पता है मुझे,"

अरे राघव! इतनी हड़बड़ी क्यों भाई, कहीं जा रहे हो ?
हाँ श्याम आज माँ का श्राद्ध हैं गौमाता को प्रसाद देकर आता हूं।

अरे भाई कौनसे जमाने में जी रहे हो, पहले ही क्या काम की परेशानियां कम है जो वहीं रुढीवादी पूरानी सोच अपना रखी है, भाई मैं तो इन सब से दूर ही रहता हूं वैसे ही जीवन में परेशानियों का मेला लगा हुआ है, चलो तुम जा ही रहे हो तो मुझे भी अस्पताल छोड़ दो बेटे को एडमिट किया है उसकी किडनी में कुछ इंफेक्शन हुआ है चिंता का विषय है, काम धंधा अलग से ठप्प हुआ है।

श्याम मेरी जिंदगी तो बड़ी इत्मीनान से गुजर रही है न जाने कौनसी अदृश्य शक्ति मुझे हर कार्य में सफलता देती है, कभी बाधा आती भी है तो कुछ दिनों में सब सामान्य हो जाता हैं, चलो मिलते हैं।

"अरे गीता, ओह गीता जल्दी से कागोल निकालकर दो छत पर रखकर आता हूं, राघव तुम अपनी संतुष्टि कर लो इस शोर में कौओ का आना मुमकिन ही नहीं, तुम दो मैं देखता हूं, राघव छत की और जाने लगा वहां पहली से ही कौओ की जोड़ी मौजूद थी वह प्रसाद रख कर हाथ जोड़ने लगा उसके भीतर शांति की सुखद लहर दौड़ने लगी उसके विश्वास की जीत जो हुई।

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

एक दिन **कृष्ण की आठों पटरानियाँ रुक्मणी, जांबवंती, सत्यभामा, कालिंदी, मित्रबिंदा, सत्या, भद्रा और लक्ष्मणा** ने एक साथ मिलकर राधा से प्रश्न किया- **"कृष्ण के साथ विवाह हमारा हुआ और नाम तुम्हारा जुड़ गया?"**

राधा- "यही मेरी प्रेम-साधना की परिणति है।"

रुक्मणी- "प्रेम तो कृष्ण से हमने भी किया है, किंतु भारतीय संस्कृति में सहधर्मचारिणी को सम्माननीय स्थान दिया गया है; न किसी प्रेमिका को। तुम तो कृष्ण की प्रेमिका हो पत्नी तो नहीं?"

राधा- "आप सब विवाह करके शरीर से कृष्ण के साथ जुड़ी और मैं बिन-ब्याही होकर भी आत्मा से जुड़ी।"

जांबवंती- "लेकिन आजीवन विरहिणी बनकर कृष्ण का इंतजार ही करती रही न। कृष्ण को पा तो नहीं सकी। इसे प्रेम-साधना की परिणति कैसे माने?"

राधा- "मेरे लिए कृष्ण को पाना नहीं, उसका हो जाना ही ज़रूरी था।"

कालिंदी- "तो तुम्हारे प्रेम को नाम क्या दें?"

राधा- "मेरे प्रेम का नाम है- समर्पण! समर्पण! समर्पण!"

मित्रबिंदा- "आख़िर तुम्हारे प्रेम की उपलब्धि क्या? आजीवन एक परित्यक्ता की तरह ही ज़िंदगी बिताती रही और क्या?"

राधा- "कदापि नहीं। कृष्ण जब ब्रज छोड़ कर गए थे तब मैंने उनसे सवाल किया था कि क्या हमारा विवाह नहीं होगा? तब उन्होंने ज्वाब दिया था कि विवाह उनका होता है जो अलग होते हैं। हम तो एक ही हैं। फ़िर विवाह कैसा?"

सत्या- "यानी कि तुम ख़ुद ही कृष्ण हो?"

राधा- "हाँ, मैं कृष्णमय हो चुकी हूं। मेरे रोम-रोम में बसे है कृष्ण। मेरे हृदय की धड़कन है कृष्ण। मेरी आत्मा की आवाज़ है कृष्ण।"

भद्रा- "ये कैसा रिश्ता है? हमारी तो समझ में नहीं आ रहा!"

राधा- "समझ में तब आएगा जब आत्मा से कृष्ण के साथ जुड़ोगी।"

लक्ष्मणा- "ये कैसे हो सकता है?"

राधा- "इसे सिर्फ़ महसूस किया जा सकता है। साँस लेते हैं कृष्ण और एहसास करती हूं मैं। सोचती हूं मैं और बिना कहे सब कुछ समझ जाते हैं कृष्ण। दर्पण में देखती हूं मैं और छवि दिखाई देती है कृष्ण की। गीत गाती हूं मैं और मधुर धुन सुनाई देती है कृष्ण की। यही है एकत्व।"

राधा के मुंह से कृष्ण के साथ उसके एकत्व की बात सुनकर आठों पटरानियाँ अवाक् रह गईं और मन ही मन बोल उठी- **"राधा तुम्हारी प्रेम साधना धन्य हो! धन्य हो! धन्य हो!"**

- **समीर उपाध्याय 'ललित', सुरेंद्रनगर, गुजरात**

आपको पता है
नाखून काटने पर खून
क्यों नहीं निकलता है?

क्योंकि उसका नाम ही
है ना.. खून

यदि आपका पेट
बाहर निकल रहा है तो
घबरायें नहीं,
उसे बाहर निकलने दे,
सबका मन करता है
बाहर घूमने का..!!!

पप्पू - डॉक्टर से - क्या
आप बिना दर्द किये भी
दाँत निकाल सकते है क्या?
डॉक्टर - नहीं तो..
पप्पू - मैं निकाल सकता हूँ !!
डॉक्टर - कैसे????
पप्पू - हीं..हीं...हीं...हीं

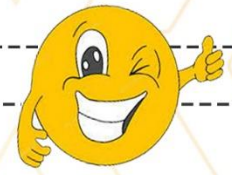

डॉक्टर - चश्मा किसके
लिए बनवाना है ??
बब्लू - अध्यापक के लिए..
डॉक्टर - क्यों..?
बब्लू - क्योंकि उन्हे
मैं हमेशा गधा ही
नजर आता हूं...!!

दही पर GST 5%
पनीर पर GST 12%
मसालों पर GST 5%
अब गणित के प्रश्न आयेगें
कि बताओ
बटर पनीर मसाला
पर कितने % GST हुआ????

गली में आवाज आई
कि 400 रुपये में जिंदगी
भर बैठकर खाइये...

बाहर निकलकर देखा
तो एक आदमी
कुर्सी बेच रहा था..!!

महाभारत

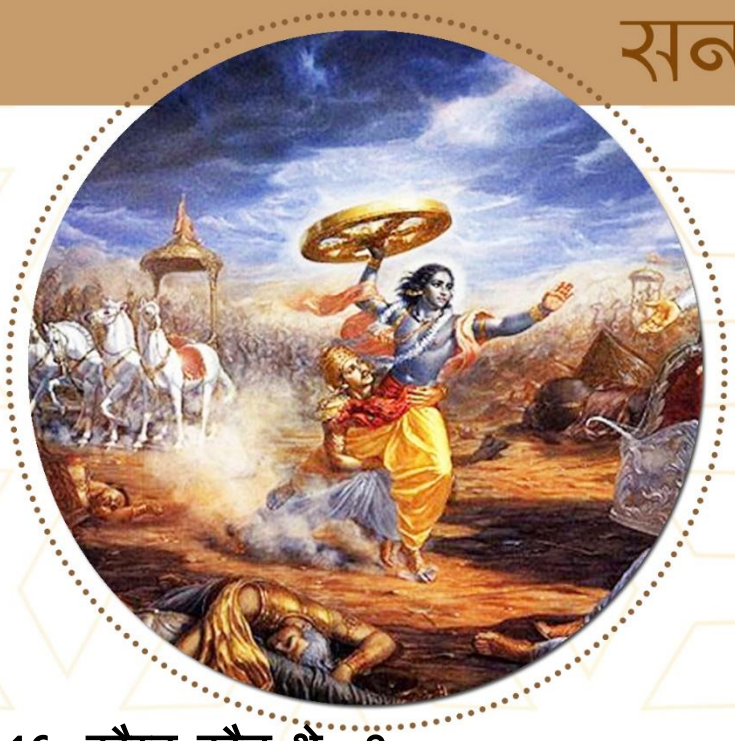

15. व्यास गुफा क्यों प्रसिद्ध है और कहां पर है...?

- उत्तराखंड राज्य के चमोली जिले में स्थित प्रसिद्ध बद्रीनाथ तीर्थधाम से चार किलोमीटर दूर स्थित भारतीय सीमा के अन्तिम गांव **"माना गांव"** में है। जन आस्था है कि इसी गुफा में बैठकर महर्षि वेदव्यास व भगवान श्रीगणेश ने महाभारत ग्रन्थ की रचना व उसे लिपिबद्ध किया था।

16. कौरव कौन थे...?

- महाराज धृतराष्ट्र के पुत्र कौरव कहलाये। धृतराष्ट्र व गान्धारी के सौ पुत्र थे। दुर्योधन उनमें सबसे बड़ा था। उसके बाद दु:शासन।

17. युयुत्सु कौन था...?

- दुर्योधन व उसके निन्यानवें भाइयों केअलावा धृतराष्ट्र का एक और पुत्र था - युयुत्सु। युयुत्सु दासी पुत्र था और वह एक धर्मपरायण यौद्धा था। युद्ध शुरू होने से पहले जब युधिष्ठर ने यह आह्वान किया कि यदि कोई धर्मप्रिय, हमारे पक्ष में आना चाहे तो स्वगात है, तो युयुत्सु कौरव पक्ष को छोड़कर पाण्डव पक्ष में शामिल हो गया। महाभारत युद्ध के पश्चात युयुत्सु जीवित बचा एकमात्र धृतराष्ट्र पुत्र था।

18. क्या धृतराष्ट्र के कोई पुत्री भी थी क्या...?

- हां। धृतराष्ट्र के एक पुत्री थी जिसका नाम था - दुश्शाला। जिसका विवाह राजा जयद्रथ के साथ हुआ। जो महाभारत युद्ध में अर्जुन के हाथों मारा गया।

19. पाण्डु के कितने पुत्र थे...?

- महाराज पाण्डु के पुत्र पाण्डव कहलाये। पाण्डु के पांच पुत्र थे। ज्येष्ठ पुत्र का नाम था युधिष्ठिर पश्चात - भीम, अर्जुन, नकुल व सहदेव थे। युधिष्ठिर, भीम व अर्जुन की माता का नाम कुन्ती था जबकि नकुल व सहदेव की माता का नाम माद्री था।

20. पाण्डव किन किन देवताओं के अंशपुत्र माने जाते है...?

- पाण्डु पत्नी कुन्ती को दुर्वासा मुनि से एक मंत्र मिला था। उस मंत्र के साथ जिस देवताओं का आवाहन किया जाता, वह देवता कुन्ती के अधीन हो जाता। इस मंत्र की सहायता से कुन्ती ने पहले धर्मराज का आहावन किया जिससे युधिष्ठर, वायुदेव के आहावन से भीम व इन्द्रदेव के आहावन से अर्जुन का जन्म हुआ। माद्री द्वारा अश्विनीकुमारों का चिन्तन करने से दो जुड़वा बालक, नकुल व सहदेव का जन्म हुआ।

21. महाभारत में पाण्डु की दूसरी पत्नी माद्री का उल्लेख नगण्य है, क्यों...?

- पाण्डवों के जन्म के कुछ समय पश्चात ही महाराज पाण्डु का निधन हो गया था और माद्री, महाराज पाण्डु के साथ सती हो गयी थी।

22. पाण्डुपुत्र भीम को विष कब व किसके द्वारा दिया गया...?
- ईष्यावश, दुर्योधन द्वारा बाल्यावस्था में भीम के भोजन में विष मिलाया गया। जिससे वे बेहोश हो गये और भीम को रस्सियों से बांधकर नदी में फेंक दिया गया। जहां से वह नागलोक पहुँच गए।

23. भीमसेन को सहस्त्र हाथियों का बल कैसे प्राप्त हुआ...?
- नदी में फेंक दिये जाने पर भीम नागलोक पहुंच गये। जहां पर नागराज वासुकि ने भीम को पहचाना और उन्हें नागलोक के दिव्य कुण्डों का रसपान करवाया जिससे भीम में सहस्त्र हाथियों के बराबर बल का संचार हुआ।

24. कौरव व पाण्डवों ने धनुर्विधा किससे प्राप्त की...?
- धनुर्वेद का प्रारम्भिक ज्ञान कृपाचार्य से प्राप्त किया ।

25. द्रोणाचार्य कौन थे...?
- द्रोणाचार्य भरद्वाज मुनि के पुत्र थे। उन्होंने भगवान परशुराम से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी। कृपाचार्य की बहन कृपि द्रोणाचार्य की पत्नी थी। द्रोणाचार्य की धनुर्वेद में निपुणता देख कौरव व पाण्डु राजकुमारों को अस्त्र-शस्त्र की गहन शिक्षा प्रदान करने के लिये, पितामह भीष्म द्वारा द्रोणाचार्य को नियुक्त किया गया।

26. अश्वत्थामा कौन थे...?
- अश्वत्थामा द्रोणाचार्य के पुत्र थे और वे मस्तक में मणी के साथ पैदा हुए। महाभारत युद्ध में अपने पिता की भांति कौरव पक्ष में शामिल हुए। इन्होंने अधर्म पूर्वक, रात्रि में निद्रामग्न पाण्ड़वों के पांच पुत्रों की हत्या की और अभिमन्यु की पत्नी उतरा के गर्भ पर ब्रह्मास्त्र का वार किया। इससे कुपित होकर पाण्डवों ने उसकी मणी को उखाड़ कर घायल कर दिया और भगवान श्रीकृष्ण ने प्रलय होने तक इसी घायलावस्था में पीडित रहने का श्राप दिया। इसी कारण चिरंजीवियों में अश्वत्थामा की गिनती होती है और यह माना जाता है कि आज भी वो अपने दुष्कर्मा की सजा शारीरिक पीड़ा के रूप में भोग रहे है।

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राजस्थान)

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
के पुराने सभी अंकों को
देखने के लिए किताब के
आइकन पर स्पर्श करें !

रबडी मालपुआ

सामग्री - दूध 4 कप, मैदा एक कप, चीनी 1 कप, केशर 8-10 रेशे, इलायची पाउडर, सजाने के लिए बादाम पिस्ता की कतरन और तलने के लिए घी।

विधि - दूध तेज आंच पर चम्मच से चलाते हुए उबलिये, जब दूध गाढ़ा होकर आधा रह जाएगा तब उसे ठंडा कीजिए। ठंडे दूध में मैदा मिलाकर बीटर से अच्छे से मिलाएं। इस मिश्रण में मैदे की गुठली ना रहे, इस बात का ध्यान रखें। मिश्रण का घोलन पतला होना चाहिए। इस मिश्रण को 2 घंटे के लिए ढक कर रख दे, चीनी में आधा कप पानी डालकर चम्मच से चलाते हुए एक उबाल आने तक पकाकर चाशनी बनाएं। इसमें इलायची पाउडर और केशर मिलाएं। लोहे की समतल कढ़ाई में घी गर्म करें और उसमें एक बड़ा चम्मच मालपुए के मिश्रण डालिए ,यह मिश्रण अपने आप गोलाकार फैल जाता है यह मालपुआ दोनों तरफ से लाल होने तक तलकर घी से निकालिए। फिर 2 मिनट चाशनी में डुबोकर निकालिए। गरम-गरम मालपुआ मेवा कतरन से सजाकर पितृपक्ष में अपने पूर्वजों के थाली में परोसे।

.....

रसोई युक्तियाँ –

- पुरिया का आटा गूंधते समय उसमें एक छोटा चम्मच शक्कर डालने से पूरीयां ज्यादा देर तक फुली रहेगी और नरम भी रहेगी।
- चकली बनाते समय तेल के मोयन की जगह मक्खन डालेंगे तो चकली करारी होंगी।
- कॉफी पाउडर फ्रीज में रखिए, इससे कॉफी के कण एक दूसरे से चिपके हुए नहीं रहेंगे।
- पकौड़ी बनाते समय बेसन में थोड़ा चावल का आटा मिलाने से पकौड़ी कुरकुरी बनेगी।

.....

घरेलू नुस्खे –

- सर्दी के ऋतु में गुड और काली तिल खाने से जुकाम पास में नहीं आता है।
- तुलसी के तीन पत्तियां नित्य सुबह खाकर उस पर से पानी पीने से मुंह में छाले नहीं होते हैं, और दुर्गंध भी नहीं आती है।
- जले हुए भाग पर शहद लगाने से जलन नहीं होती है और फफोला भी नहीं आता।
- जीभ पर छाले आ गए हो तो केला दूध के साथ सुबह खाने से छाले कम हो जाते हैं।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

आगामी त्योहारों की सूचि

भारत त्योहारों का देश है, इन त्योहारों का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी संस्कृति को बचाये रखने की हमारी ये एक पहल है, जिसमे आप भी जुड़ सकते है।

आगामी माह (अक्टूबर) में आने वाले त्योहारों की सूचि में से आप किसी पर लेख लिखना चाहते है तो हमे सूचित करें –

- ❖ गाँधी जयंती
- ❖ दुर्गाष्टमी
- ❖ सरस्वती पूजा
- ❖ विजय दशमी / दशहरा
- ❖ पापाकुंशा एकादशी
- ❖ शरद पूर्णिमा
- ❖ करवा चौथ
- ❖ अहोई अष्टमी
- ❖ गोवत्स द्वादशी
- ❖ धनतेरस
- ❖ काली चौदस / छोटी दिवाली
- ❖ दिवाली
- ❖ गोवर्धन पूजा / अन्नकूट
- ❖ भैया दूज
- ❖ लाभ पंचमी
- ❖ छठ पूजा

संपर्क सूत्र - paramparabhartiya@gmail.com

1.फारसी शब्द **'हिन्द'** से ही हिन्दी शब्द की उत्पत्ति हुई है जिसका अर्थ **'सिंधु नदी की भूमि'** होता है।

2. हिन्दी संस्कृत का अपभ्रंश है। **संस्कृत को देवों की भाषा** भी कहा जाता है। हिन्दी और संस्कृत दोनों को **देवनागरी लिपि** में लिखा जाता है। देवनागरी लिपि का मतलब होता है देवों के यहां लिखी जाने वाली लिपि।

3. भारत में आज के समय बोली जाने वाली हिन्दी को आधुनिक हिन्दी या **मानक हिन्दी** कहा जाता है।

4. हिंदी को आधिकारिक भाषा का दर्जा देने वाला **पहला राज्य बिहार** है। **1881 में बिहार ने उर्दू** को हटा कर हिंदी को अपनी आधिकारिक भाषा घोषित किया था।

5. हम 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाते हैं क्योंकि सन **1949 में आज ही के दिन भारतीय संविधान ने हिन्दी भाषा को राजभाषा** का दर्ज़ा दिया था।

6. भारत के हर क्षेत्र की अपनी अलग अलग भाषाएँ बोली जाती हैं, फिर भी देश के करीब 77% लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। हिंदी भारत में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है।

7. विश्व में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषाओं में **हिंदी का स्थान चौथे नंबर** आता है।

8. किसी अन्य भाषा को सिखने की बजाय हिंदी भाषा सीखना बहुत आसान है क्योंकि हिंदी शब्दों को उसी तरह लिखा जाता है जैसे उन्हें बोला जाता है।

9. भाषाई रूप से हिन्दी और उर्दू दोनों एक ही भाषाएं है। **हिन्दी को जहां देवनागरी लिपि** में लिखा जाता है और इसमें संस्कृत के शब्दों की भरमार है। वहीं **उर्दू को पर्सियन लिपि** में लिखा जाता है और इसमें पर्सियन शब्द ज्यादा है।

10. **अमेरिका के 45 और विश्व भर के करीब 176 विश्वविद्यालयों** में हिन्दी पढ़ाई जाती है।

11. **विदेशो में 25 से भी अधिक पत्र - पत्रिकाएं** हिंदी में प्रकाशित होती है।

12. अंग्रेजी भाषा के सैकड़ों शब्द हिंदी से लिए गए हैं जैसे - कर्मा, योगा, बंगला, चीता, लूटपाट, ठग, अवतार, महात्मा, जंगल इत्यादि।

13. हिन्दी भाषा के इतिहास पर आधारित रचना करने वाले सबसे पहले लेखक कोई भारतीय नहीं बल्कि एक **फ्रांस के लेखक ग्रासिन द तैसी** थे।

14. संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिन्दी में पहली बार 1977 में संबोधित किया गया था, तब तत्कालीन **विदेश मंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी** ने हिंदी में भाषण देकर देश का दिल जीत लिया था।

15. इंटरनेट पर ज्यादातर इस्तेमाल अंग्रेजी भाषा का ही होता है लेकिन फिर भी हर 5 में से 1 व्यक्ति इंटरनेट को हिंदी में चलाना पसंद करता है। अंग्रेजी की तरह आप हिंदी में भी वेबसाइट एड्रेस बना सकते है।

16. हिंदी शब्द **'हरि'** एक ऐसा शब्द है जिसके दर्जन से भी ज्यादा मतलब होते हैं जैसे यमराज, पवन, इन्द्र, चन्द्र, सूर्य, विष्णु, सिंह, किरण, घोड़ा, तोता, साँप, वानर,

मेंढक, वायु, और उपेन्द्र आदि।

17. सबसे पहले हिंदी में कविता लिखने वाले शख्स प्रख्यात कवि **'अमीर खुसरो'** थे।

18. अंग्रेजी में सबसे अधिक बोला जाने वाला शब्द "हेलो" है, वैसे ही **"नमस्ते"** हिंदी का सबसे ज्यादा बोला जाने वाला शब्द है।

19. 1805 में प्रकाशित हुई **'प्रेम सागर'** को हिंदी की पहली प्रकाशित पुस्तक माना जाता है, जिसे **लल्लू लाल जी** ने लिखा था।

20. हिंदी भाषा में उच्चारण के आधार पर 45 वर्ण होते हैं। इनमें 10 स्वर और 35 व्यंजन होते हैं। लेखन के आधार पर 52 वर्ण होते हैं इसमें 13 स्वर, 35 व्यंजन तथा 4 संयुक्त व्यंजन होते हैं।

21. हिंदी भारत की भाषा है लेकिन भारत के अलावा इन देशों में भी बोली समझी जाती है - फिजी, सूरीनाम, मॉरीशस, गुयाना, नेपाल, त्रिनिदाद एवं टोबैगो।

सतगुरु – पुराण – सत का आना

पारब्रह्म परमात्मा को सृष्टि रचना का विचार हुआ।

- होणकाल ब्रह्म का पद
- सच्चिदानंद का पद
- जन्मना मरना
- सब अवतार यहां से आते है।
- इन्हें निमित अवतार कहते है। जगत सुरक्षा व धर्म स्थापना के लिए आते है।
- इसको विष्णु का पद भी कहते है।

- सतलोक में सत पुरुष को बैठाया
- सत+चित + आनंद का पद
- निरभै ठौड
- यहाँ से सत शब्द रूपी ने:अक्षर उस संत नित्य अवतार द्वारा जिसको परमात्मा नियुक्त करते हैं, आता है। तब आत्मा को वो पुरुष सतलोक लेकर जाता है। यही सतगुरु पुराण है। वर्तमान में सुखराम जी मा. का ग्रंथ है।

परमात्म् तत् द्वारा रचना - होणकाल ब्रह्म का पद - सतलोक में सतपुरुष को बिठाया

(1) सबसे पहले पाँच तत्व बनाये

(2) त्रिगुणी माया बनाई

(3) सब आत्मा को होणकाल में भेजा शक्ति की उत्पत्ति - फिर शक्ति रूपी देवी को आदेश दिया तीन लोक बसाना - इण्ड कटाक्ष से तीनों देवों की उत्पत्ति। विष्णु भगवान- इनकी नाभि से ब्रह्मा की उत्पत्ति, ब्रह्मा जी के शीष से शंकर की उत्पत्ति, उसके बाद शक्ति रूप से तीन देवियाँ बनी लक्ष्मी, सावित्री, गौरा तीनों के संग से तीन लोक की उत्पत्ति चालू करायी।

(1) - धरती व आकाश को राम के नाम से ठहराया (परमात्मा ने आकाशवाणी द्वारा यह संदेश दिया)। देवताओं की अपनी ताकत से धरती आकाश नहीं धूंबे।

- अब तीनों ने पुरुष (मनुष्य) बनाये। यहाँ पर जो मनुष्य आये वो आकर राम-राम करते। उस समय तक भूख-प्यास, नींद, मोह-माया, कामना कुछ नहीं थे। अतः राम-राम करते और वापस ब्रह्म में मिल जाते।

(2) - इस तरह तीन लोक वापस उजड़ने लग गया। अतः देवी व देवों ने गोष्टी करी। संसार बसाने की कल कीमत लाओ व इनको राम-राम करना भुलावो ।
- तब शरीर धारण करके सब यहाँ आये और नाना प्रकार से इनको (मनुष्य) रखने का सुझाव बताये और उपाय करे। भूख-प्यास, मोह-माया, निद्रा सब बनाये। फिर भी मनुष्य (हंस) राम-राम करना नहीं छोड़ते। ब्रह्माजी ने चार वेद बनाये व इनसे कल्याण बताया।
- शिवजी ने अनेक मंत्र बनाये। कई शास्त्र-पुराण वेद बनाये और उनसे ही कल्याण बताने लगे।
- ऋषभ देव (विष्णु के अवतार) ने खेती करना, मकान, राजनीति, हाथी घोड़ा, अस्त्र-शस्त्र तथा जीवन जीने का तरीका इत्यादि बातें बताई और मनुष्यों (हंसों) को इन कार्यों में लगाया।
- चार खान व चार वाणी बनाई साँप-बिच्छु आदि जीव-जन्तु बनाये। रोग बनाये झाड़ा-मूंठ वैद्य आदि बनाये। तब मंदिर की मूर्ति से कल्याण बताया जगत के कार्य इनसे होते है। यह शास्त्रों में लिख दिया। अब हंस (मनुष्य) आपस में अड़ने-भिड़ने लग गये और राम-राम करना भूल गये।
- अब तीन लोक बसने लग गया और आदि रास्ता ब्रह्म का हंस भूल गये। यह कार्य देवताओं ने सृष्टि बसाने के लिए किये। अतः आज कुछ लोग उनको हीन मानने लग गये। यही बड़ी भूल हो गई। यह दोष अर्थ करने वालों से हो गया।
जबकि देवताओं ने तो परमात्मा की इच्छा को ही मानकर यह सब कार्य किये।
- पाप-पुण्य के लिए धर्मराय की नियुक्ति करी व अन्य देवों का मंत्रिमंडल बनाया। सबको औदा दिया।
- अब सब जीव जन्म-मरण की फाँसी में बंध गये। ब्रह्म विचार नहीं सुज रहा था इस तरह करोड़ों वर्षों तक आत्मा जन्म-मरण के चक्कर में चलती रही। कभी स्वर्ग, बैकुण्ठ व चौरासी इस तरह धर्मराय जी से बार-बार दंडित होती रही।
- देवता व शक्ति तो नियमानुसार तीन लोक का संचालन करने लगे। अब हंसवृत्ति आत्माएँ इन नियम से दु:खी हो गई अब क्या करें। हे! परमात्मा यह कैसी रचना है आपकी? हंसो की विनती सुनकर परमात्मा ने आकाशवाणी से कहा- तुम चिन्ता मत करो। मैं अपना स्वरूप संत को देकर सतस्वरूप भगवान, का शब्द देकर भेजता हूँ।

इस तरह प्रथम बार होणकाल ब्रह्म से शुद्ध चेतन स्वयं परमात्मा सतलोक से शब्द, ने: अक्षर, परम तत्व का औदा लेकर-सतगुरु रूपी संत आते है। इस तरह गेबाऊ धरती पर परमात्मा प्रकट हुए व आकाशवाणी हुई। तब देवों एवं जनता ने इनकी आवाज सुनी और देखा। तब देवता उनके पास गए और पूछा आप कौन है और कहाँ से आये है? तब संतों ने अपना औदा और पराक्रम देवों को बताया। उस समय देवता मनुष्य शरीर के रूप में होते थे। उसके बाद संतों ने राम नाम का यह अणभे ज्ञान देवताओं को बताया।

देवताओं ने यह ज्ञान धारण किया और संतों का गुणानुवाद किया।
क्रमशः अगले अंक में।

संत शिष्य - जगदीश प्रसाद जागेटिया जी, ब्यावर (राजस्थान)

नवरात्रि के पहले दिन मां शैलपुत्री की पूजा

मां शैलीपुत्री के एक हाथ में त्रिशूल और दूसरे हाथ में कमल है और ये देवी वृषभ पर विराजमान हैं। उनका यह स्वरूप बेहद शुभ माना जाता है। **मां शैलपुत्री हिमालय की पुत्री है।** माता शांति और उत्साह देने वाली और भय को दूर करने वाली है।

नवरात्रि के दुसरे दिन मां ब्रह्मचारिणी की पूजा

मां ब्रह्मचारिणी के दाहिने हाथ में जप की माला व बाएं हाथ में कमंडल है। माता ज्योतिमय और आभामय से परिपूर्ण है जो दुष्टों को भी सही मार्ग दिखती है। मां से महादेव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप किया था।

नवरात्रि के तीसरे दिन मां चंद्रघंटा की पूजा

माता की पूजा करने से भक्तों में वीरता, निर्भयता और सौम्यता का विकास होता है। मां की मुद्रा युद्ध मुद्रा है। माता अपने मस्तक पर घंटे के आकार का चंद्रमा धारण किये हैं। माता को **स्वर की देवी** भी कहते है।

नवरात्रि के चौथे दिन मां कूष्माँडा की पूजा

माता को **"आदिशक्ति व आदिस्वरूपा"** भी कहते है। माता ने अपनी दिव्य मुस्कान से संसार का अँधेरा दूर किया था। सभी के दुःखों को हरने वाली माता का निवास स्थान सूर्य है। माता सिंह पर सवार है जो धर्म का प्रतिक माना जाता है।

लेख पढने के लिए www. आइकन पर क्लिक करें।

शारदीय नवरात्रि और ज्वारे

शारदीय नवरात्रि और ज्वारे का आपसी घनिष्ठ संबंध है। शारदीय नवरात्रि का जब धार्मिक पर्व आता है, यह धार्मिक पर्व 9 दिनों का होता है इन 9 दिनों में जगत जननी मां दुर्गा की पूजा की जाती है। इन 9 दिनों जगत जननी दुर्गा मां के नौ रूपों की आराधना की जाती है। भक्तगण नवरात्रि में दुर्गा मां के श्रद्धा के कारण व्रत रखते हैं, मां की आराधना किसी तपस्या से कम नहीं, भक्तगण विभिन्न प्रकार से व्रत रखकर अपनी श्रद्धा और भक्ति को मां के चरणों में अर्पण करते हैं।

हमारी पौराणिक कथाओं में मान्यता है कि सर्वप्रथम भगवान रामचंद्र जी ने समुद्र के किनारे शारदीय नवरात्रि में मां की आराधना की थी, उसके उपरांत ही सेतु का निर्माण प्रारम्भ हुआ था।

चैत्र मास की नवरात्रि हो अथवा शारदीय नवरात्रि दोनों नवरात्रि में ज्वारे बोए जाते हैं ज्वारे बोने की परम्परा अनादि काल से चली आ रही है और भक्त गण दोनों नवरात्रों में ज्वारे बोते हैं। ज्वारे को कहीं-कहीं **"खेत्री बिजीत"** भी कहा जाता है।

क्यों बोये जाते है ज्वारे ?

संपूर्ण हिंदू समाज में नवरात्रि के प्रारम्भ में जब घट की स्थापना की जाती है उसी समय जो बोने की प्रथा है उसे **"ज्वारे बोना कहते हैं या खेत्री बिजीत"** कहते हैं। जौ बोये जाते हैं उनके उत्पन्न होने पर या बड़े होने पर उन्हें "ज्वारे" बोला जाता है।

महत्व –

मां दुर्गा का जो हम पाठ करते हैं, उसके ग्यारहवें अध्याय में इस बात का उल्लेख है मां शाकंभरी देवी के सम्मान में ज्वारे बोए जाते हैं। मां शाकंभरी दुर्गा माता का रूप है और मां पोषण की माता है अतः हमारा घर परिवार सुख समृद्धि और धन्य धन्य से भरपूर रहे इसलिए ज्वारे बोए जाते हैं।

जौ बसंत ऋतु की पहली फसल है उसको मां के चरणों में अर्पण करना मानव अपना पहला कर्तव्य समझता है।

मान्यताये –

एक मान्यता यह भी है जब सृष्टि का प्रारंभ हुआ था तो पहली फसल जौ की हुई थी इसलिए इसे देवी माता पर चढ़ाया जाता है।

दूसरी मान्यता यह है कि धरती पर जितने भी अनाज हैं उसमें जौ को पूर्ण अन्न माना जाता है अन्य किसी अनाज को नहीं, यही कारण भी है जिसमे हवन आदि मे जौ को ही देवी देवताओं को अर्पित किया जाता है।

तीसरी मान्यता वैज्ञानिक तथ्य पर आधारित है, जौ सबसे सरलता से पचता है तथा

स्वास्थ्यवर्धक है बहुत सी बीमारियों में इसका उपयोग किया जाता है।

ज्वारे कैसे बोये –

- ज्वारे बोने के लिए, जहाँ पर हम दुर्गा मां की मूर्ति की स्थापना करते है उनके आगे ज्वारे बोए जाते हैं।
- ज्वारे बोने के लिए एक बांस की डलिया ले यदि बांस की डलिया उपलब्ध ना हो तो आप कच्ची जमीन अथवा पक्की जमीन पर चौकोर रूप में मिट्टी की परत जमा कर ज्वारे बोए जाते है।
- पहले जितने जौ बोने हो उन्हें अच्छी तरह से साफ कर ले फिर जौ को साफ पानी में रात भर भिगो दे, आप देखेंगे जो खराब होंगे वह ऊपर आ जाएंगे उन्हें आप निकाल दें, तथा जो पानी में नीचे बैठे हैं सिर्फ उन्हीं को मां दुर्गा का नाम लेकर उस मिट्टी में बो दे। जौ के ऊपर थोड़ी सी ही मिट्टी डालें। साथ में मां लक्ष्मी जी का भी आवाहन करे।
- जब हम जौ बोये तब साथ ही थोड़े से साफ गेहूं के दाने भी डाल दें और उस समय नौ माताओं तथा नवग्रह का नाम भी लें।
- जो बोने के बाद बीचो बीच में मिट्टी का कलश स्थापित करें उस कलश में जल भर दे तथा ऊपर आम के पत्ते लगाकर श्रीफल लाल कपड़े में लपेटकर रख दें। - एक बार घट स्थापित करने के बाद उसे हिलाते नहीं हैं अब पानी का छिड़काव करें मिट्टी का कलश रखने से उसमें नमी बनी रहती है तथा 9 दिन तक जल भरा रहता है।
- 9 दिन तक जौ के ऊपर जो हम जल डालते हैं उस कारण घट भी नमी से भरा रहता है आप देखेंगे 3 दिन बाद जौ में अंकुर फूटने लगेंगे और बाकी 6 दिन बहुत तेजी से बढ़ेंगे।
- पानी की नमी को बनाये रखने के लिए कलश के पास दीपक नहीं जलाते हैं, दीपक मां दुर्गा के सामने ही जलाना चाहिए।

भविष्य का ज्ञान –

ज्वारे की वृद्धि हमें हमारे भविष्य का भी संकेत देती है ऐसी लोगों की मान्यता है यदि ज्वारे हरे रंग के और काफी लंबे हो तो घर में सुख समृद्धि आएगी यदि ज्वारे मुरझाए हुए हो तो यह संकेत है कि घर में कोई कष्ट आने वाला है।

समाज के हर वर्ग के लिए अलग-अलग अर्थ होता है जो **ज्वारे तेजी से बढ़ते हैं तो किसान प्रसन्न होते है उनकी फसल तेजी से बढ़ेगी अर्थात अच्छी होगी। वैश्य के लिए अच्छे तथा बुरे व्यापार का संकेत होता है, क्षत्रियों के लिए युद्ध में जय तथा पराजय का संकेत है, ब्राह्मण इसे अपने अध्ययन से जोड़कर देखते हैं, विद्यार्थी के लिए शिक्षा पूरी होगी अथवा अधूरी।**

दशहरे वाले दिन ज्वारे की पत्तियां तोड़ कर बहन अपने भाई के माथे पर तिलक लगाकर उसके हाथ पर ज्वारे रखती है तथा बड़ो से आशीष लिया जाता है। उसके बाद कलश का जल पूरे घर में छिड़क दिया जाता है यदि ज्वारे बचते हैं तो उन्हें ठंडा कर देते हैं।

– **श्रीमती उषा चतुर्वेदी भोपाल, (म. प्र.)**

भारतीय परम्परा
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

हार्दिक
आभार

www.bhartiyaparampara.com